<u>प्रायोगिक खण्ड</u>

अंकन एवं अनुअंकन

चित्रांकन एक व्यापक शब्द है। इस शब्द में सृजन शैली तथा प्रविधि दोनों समाहित हैं। चित्र से तात्पर्य है– किसी भी माध्यम (गेरु, रंग, स्याही, खड़िया, पेन्सिल, तूलिका या वर्तिका) द्वारा किसी भित्ति, कागज या अन्य किसी तल पर अनेक आकृतियों को संयोजित करना।

अंकन

जब हम अंकन करते हैं तो उसमें वस्तुओं, विचारों या भावों के बिम्ब को ही फलक पर किसी माध्यम से प्रस्तुत करते हैं जो मात्र आभास होता है। वह वास्तविक वस्तु नहीं होता। इस आभास की कुछ निजी विशेषताएं होती हैं। प्रयुक्त माध्यम व सामग्री के अनुसार इस आभास के रुप बदलते जाते हैं। एक ही वस्तुरूप का अंकन तैल रंगों, जल रंगों, पेस्टल रंगों, पेन्सिल, कोलाज या छापा–चित्रण में अलग–अलग प्रभाव उत्पन्न करता है। इसमें कोई अच्छा या बुरा नहीं है। प्रत्येक माध्यम का अपना गुण व प्रभाव होता है जिसे उसके प्रयोग से ही समझा जा सकता है। चित्रकार किसी भी माध्यम से द्विआयामी, त्रिआयामी या पुंजात्मक चित्र बना सकता है। चित्रांकन पद्धति के दो पक्ष हैं – सामग्री तथा रुप योजना।

सामग्री – सामग्री से तात्पर्य है अंकन हेतु प्रयोग में लिए जाने वाले उपकरण, रंग और उनका प्रभाव। उपकरण में पेंसिल, पेन, तूलिका, चाकू, चित्रतल आदि आते हैं। रंग भी दो प्रकार के होते हैं सूखे व गीले। सूखे माध्यम में पेन्सिल, चारकोल, पेस्टल आदि आते हैं तथा टेम्परा, जलरंग, तैलरंग, एक्रेलिक आदि गीले माध्यम हैं। ये उपकरण व रंग विविध प्रभाव उत्पन्न करते हैं। (देखें खण्ड 'अ' माध्यम एवं तकनीकी अध्याय–4)

रुप योजना – चित्रकार के मन में किसी भी विषय व भाव को व्यक्त करने के लिए रूप योजना की कल्पना का उद्‌भव होता है। इस रुप योजना के आधार पर ही अमूर्त या मूर्त रुप योजना प्रस्तुत की जाती है। इसके अन्तर्गत हम त्रिआयामी व द्विआयामी रुप योजना को समझने का प्रयास करेंगे।

त्रिआयामी अंकन

चित्रकार किसी वस्तु का अंकन छाया प्रकाश के माध्यम से वास्तविकता के आधार पर ठोस दिखाने के लिए करता है उसे त्रिआयामी, त्रिविधात्मक या त्रिविमिय चित्रण कहते हैं। द्विआयामी चित्रभूमि पर तृतीय आयाम के निरुपण के लिए दृष्टिभ्रम अतिआवश्यक है। इसमें क्षय–वृद्धि (देखें खण्ड 'अ' संयोजन के सिद्धान्त अध्याय–3) के नियम ध्यान में रखने आवश्यक हैं। रंग की तान भिन्नता द्वारा आकार निरुपण करने पर, अंकित रेखांकन के द्वारा आकृति के ठोस आकार के भिन्न–भिन्न अंगों का स्पष्ट चित्रण करने पर, रेखाएँ अतिआच्छादित करके आकृति की दूरी व निकटता दिखाने पर तथा परिप्रेक्ष्य के नियमों का पालन करने पर त्रिआयामी प्रभाव उत्पन्न होता है। त्रिआयामी अंकन में दृष्टिभ्रम उत्पन्न करना अत्यन्त कठिन है। जैसे घनाकार के छः पक्ष होते हैं किन्तु एक बार में एक दृष्टिकोण से तीन पक्ष ही देखे जा सकते हैं। इस कारण घनाकार के वर्ग चित्रांकन में वर्ग नहीं रह पाते तथा समकोण भी अधिक कोण व न्यूनकोण में बदल जाते हैं। त्रिआयामी वस्तु चित्रण में क्षयवृद्धि, परिप्रेक्ष्य तथा छाया–प्रकाश महत्त्वपूर्ण तत्त्व हैं। (देखें खण्ड 'अ' संयोजन के सिद्धान्त अध्याय–3)

अंकन में छाया–प्रकाश का महत्त्व अत्यधिक होता है। छाया प्रकाश का प्रभाव आकृति तथा चित्र भूमि के द्विआयामी स्वभाव को त्रिआयामी प्रभाव प्रदान करता है। यह आकार को ठोस रूप भी प्रदान करता है। द्विआयामी चित्रतल को छाया प्रकाश के माध्यम से कलाकार त्रिआयामी बना देता है। चित्रित

वस्तु प्रकाश के कारण कलाकृति में अद्‌भुत प्रभावयुक्त प्रतीत होती है। सामान्यतः जो तल प्रकाश के स्रोत के सर्वाधिक निकट होते हैं तथा जिनका पोत प्रकाश को परावर्तित करने का सामर्थ्य रखता है, वे तीव्र तथा अग्रगामी वर्णों के द्वारा अभिव्यक्त किये जाते हैं। इस प्रकार प्रकाश स्रोत से दूर तथा जिनका पोत प्रकाश को परावर्तित करने में सामर्थ्य नहीं रखता हो वे मंद तथा पृष्ठगामी वर्णों से अभिव्यक्त किये जाते हैं।

कलाकृति में छाया प्रकाश तथा परछायी के प्रभाव के आभास को प्रकट करने के लिए एक महत्त्वपूर्ण दृष्टिकोण का चयन किया जाता है। आकृति की सीमा रेखा भी अत्यधिक महत्त्व रखती है। अंतररेखाएं आकृति की स्पष्टता की द्योतक होती हैं। द्विआयामी चित्रभूमि पर त्रिआयामी चित्रण करने के लिए छः सिद्धान्त प्रमुख हैं–

1. सीमा रेखा अथवा रंग विभिन्नता के द्वारा आकार निरूपण करने पर आकृति की छाया जैसा प्रभाव उत्पन्न होता है।
2. आंतरिक रेखांकन के द्वारा आकृति के ठोस आकार के भिन्न–भिन्न अंगों का चित्रण स्पष्ट होता है।
3. सीमा रेखाएं तथा आतंरिक रेखाएं अतिआच्छादित करने के कारण आकृति की निकटता तथा दूरी स्पष्ट की जाती है।
4. परिप्रेक्ष्य सिद्धान्तों के द्वारा आकृति में ठोसपन तथा चित्रभूमि पर गहराई अर्थात् तीसरे आयाम का आभास उत्पन्न होता है।
5. निकटता तथा दूरी को प्रकट करने के लिए आकृतियों का विशाल तथा लघु रूप भी त्रिआयामी आभास उत्पन्न करता है।
6. आकृति में छाया प्रकाश का चित्रण वास्तविक प्रकाश मात्रा के अनुरूप करना चाहिए। यह छाया–प्रकाश आकृति के वास्तविक रूप का निरूपण करता है।

निर्देश – छाया–प्रकाश तथा क्षय–वृद्धि के द्वारा द्विआयामी चित्रभूमि पर त्रिआयामी चित्रण संभव होता है। दैनिक जीवन के उपयोग में आने वाली वस्तुओं का यथार्थवादी चित्रण करें तथा वस्तुओं पर छाया प्रकाश बाँयी ओर से आता दर्शायें। अधिक से अधिक तीन वस्तुओं को यथासम्भव 25 x 25 फीट के कक्ष में मॉडल स्टेण्ड पर या स्टूल पर ड्रॉइंग बोर्ड रखकर संयोजित करें। पृष्ठभूमि में उपयुक्त रंग का कपडा या कागज लगायें। स्टेण्ड की ऊँचाई 50 सेमी से अधिक न हो। अंकन को 1/4 इम्पीरियल (15″x11″)आकार के कागज पर पेन्सिल के माध्यम से पूर्ण करें। पेन्सिल B, 2B, 4B, 6B ले सकते हैं।

द्विआयामी अंकन

जब चित्रण में से रूप को यथा तथ्य ठोस दिखाने का ध्येय गौण कर, चित्रण माध्यम के अनुसार परिवर्तित एवं साधारणीकृत रूप केवल संयोजन दृष्टि से चित्रित किए जाए, तब यह अनुअंकन, द्विआयामी, द्विविधात्मक या द्विविमिय चित्रण कहलाता है। अंग्रेजी में इसे Rendering कहा जाता है। सफल तकनीकी प्रयोग, प्रमाण–परिवर्तन तथा पुनः संयोजन से इस चित्रण में नंदतिक प्रभाव उत्पन्न किया जाता है। कलाकृति द्विआयामी होने के कारण बुद्धि और साधनों द्वारा वास्तविकता का भ्रम उत्पन्न किया जा सकता है। सृजन प्रक्रिया में आकृति का संपूर्ण प्रभाव चित्रकार को प्रेरणा देता है। अंकन भी आकृति का छाया चित्र नहीं होता है, अपितु उसमें भी यथातथ्य के स्थान पर कभी वर्णन, तो कभी संयोजन आदि प्रभावी होते हैं। द्विआयामी चित्र में कला तत्त्व प्रभावी होते हैं। सृजनात्मकता के लिए – आकृतियों का मुक्त संयोजन, मुक्त वर्ण नियोजन, स्वतंत्र तल व्यवस्था आदि की सहायता ली जाती है। ज्यामितीय क्षयवृद्धि, वातावरणीय प्रभाव, छाया प्रकाश, रूप–रंग व पोत की स्वाभाविकता, चित्रतल पर वास्तविक स्थिति से बचकर कलात्मक प्रभाव की सृष्टि की जा सकती है। अंकन के बंधन से मुक्त होने के लिए

कलात्मक रूप की अभिव्यक्ति के लिए प्रमुख आकर्षण मुख्य होता है।

कलाकृति द्विआयामी रूप होती है। कलाकृति में समस्त बुद्धि तथा साधनों का प्रयोग करने पर भी वास्तविकता का केवल भ्रम ही उत्पन्न किया जा सकता है। इस प्रकार वस्तु आकृति के रूप का बंधन चित्रकार को इस भ्रामक स्थिति से ऊपर नहीं उठने देता। यदि सृजन प्रक्रिया का विश्लेषण किया जाये तो ज्ञात होगा कि आकृति का महत्त्व इस प्रक्रिया में केवल प्रेरणा का है। यद्यपि सृजन एक स्वतंत्र प्रक्रिया है, परन्तु इस प्रक्रिया का आरंभ वास्तविक प्रेरक तत्त्व से होता है।

त्रिआयामी प्रभाव मुक्ति के उपाय – त्रिआयामी वस्तु रूप का पूर्वाग्रह समाप्त करने के लिए निष्ठा तथा निरन्तर अभ्यास की आवश्यकता होती है। द्विआयामी तथा त्रिआयामी कलाकृति अनुभव तथा सतत् अध्ययन, कला तत्त्व और सिद्धान्तों के आधार पर निर्भर होती है। द्विआयामी चित्रण के लिए त्रिआयामी प्रभाव उत्पन्न करने वाले तत्त्वों की सचेतन अवहेलना करने के लिए निम्न उपाय उपयोगी होंगे–

(1) आकृतियों को सामने, पीछे, ऊपर, नीचे सभी ओर से काटकर,तोड़कर, फैलाकर अनेक प्रकार से देखें। इस प्रकार के निरीक्षण से जो आकार तैयार हों उन्हें चित्रतल पर नियमानुसार संयोजित करें।

(2) आकृतियों को संजोने के पश्चात् मध्यवर्ती रेखा और वर्ण से चित्र पूरा किया जाए।

(3) गहराई का बिल्कुल विचार न करें तथ सपाट क्षेत्र में आलेखन की भाँति आकार संयोजित करें। आकृतियों को दूरी के अनुसार नहीं वरन् महत्त्व के अनुसार छोटा या बड़ा बनायें।

(4) वस्तु समूह की प्रत्येक आकृति का अलग–अलग रेखांकन करके उसका स्थानीय रंग भर दिया जाये तथा उन आकृतियों को कैंची से बाह्य सीमा के साथ काट लिया जाये।

(5) चित्र भूमि को तल विभाजन के नियमों द्वारा उपयुक्त भागों में बांटकर उसकी पृष्ठ भूमि और अग्रभूमि में रंग भर दिया जाये।

जब चित्रकार आकृति पर दृष्टिपात करता है, तब आकृति का सम्पूर्ण प्रभाव कलाकार के मस्तिष्क पर अंकित हो जाता है। इस प्रभाव में कभी वस्तु की आकृति, कभी वर्ण और कभी योजना बलवान हो जाती है। इस प्रकार कलाकार तथा कैमरे में अंतर प्रकट होता है क्योंकि कलाकार अर्थसार के प्रमुख आकर्षण को चयन कर चित्रित करने का प्रयत्न करता है। जबकि कैमरा यथा तथ्य वर्णित करने का साधन है। अतः इस प्रकार कलाकार कलाकृति सृजन के लिए प्रेरणा तथा आधार प्राप्त कर लेता है। इस प्रकार कलाकृति में दो दृष्टिकोण संभव हैं–

1. यदि चित्रकार के मस्तिष्क में वस्तु के त्रिआयामी रूप का पूर्वाग्रह होगा तो कलाकृति वास्तविकता का भ्रम उत्पन्न करने वाली तथा बंधनयुक्त–सी प्रतीत होगी।
2. यदि चित्रकार सृजनात्मकता से प्रेरित होगा, तब कलाकृति लयात्मक रचना और संतुलन का उदाहरण बनेगी। इस प्रकार वस्तु का रूप गौण हो जायेगा तथा प्रवाह, प्रमाण, संतुलन और सामंजस्य आदि सर्वोपरि होंगे।

निर्देश : रेखांकन के लिए सप्ताह में दो बार विद्यालय परिसर या बाहर जाकर अध्ययन करें। प्राप्त एवं मानव निर्मित पोत का अध्ययन कर ड्राईंगशीट पर कई भागों में विविध पोत सृजित करें। भाग 'अ' वस्तु चित्रण में ली गयी वस्तुओं को विविध आयामों, दृष्टिक परिप्रेक्ष्यों में देखकर अंकित कर रुप परिवर्तन करने का अभ्यास करें। उदाहरण के लिए संलग्न वस्तु चित्रण एवं उनके आधार पर बनाये गये द्विआयामी चित्र देखें। द्विआयामी चित्रण मुख्य तत्त्व तल–व्यवस्था, तल–विभाजन, प्रवाहमय रेखांकन, वर्ण सामंजस्य का संतुलित प्रभाव होता है। इसमें वस्तु की आकृति की पूर्ण अवहेलना नहीं करनी चाहिये। द्विआयामी चित्रण में रंगों के अनेक बलों तथा तानों का प्रयोग करना चाहिये। इससे चित्र में आकर्षण उत्पन्न होता है।

त्रिआयामी चित्रण – 1

त्रिआयामी चित्रण – 2

त्रिआयामी चित्रण – 3

त्रिआयामी चित्रण –4

द्विआयामी चित्रण – 1

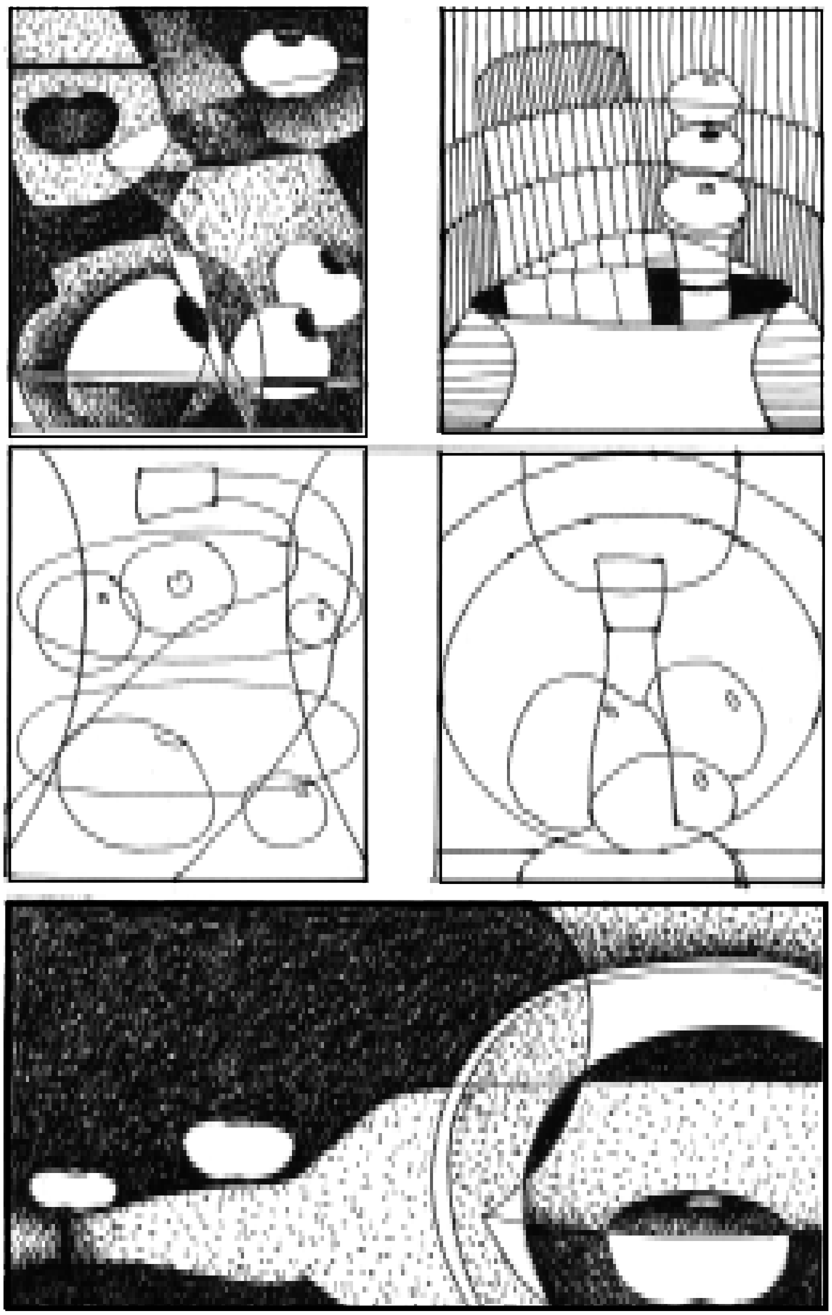

द्विआयामी चित्रण – 2

द्विआयामी चित्रण – 3

द्विआयामी चित्रण – 4